आकलन एवं मूल्यांकन

चुनौतियां एवं संभावनाएं

धर्मेश कुमार जैन

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 (एनसीएफ 2005) और शिक्षा का अधिकार कानून, 2009 लागू होने के साथ ही राजस्थान में पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों व मूल्यांकन के क्षेत्र में बड़े बदलाव लाने के प्रयास हो रहे हैं। पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें समय-समय पर बदलती रही हैं, लेकिन मूल्यांकन प्रक्रिया में बदलाव कई दशकों के बाद आ रहा है। एनसीएफ 2005 के अनुसार शिक्षण एवं मूल्यांकन साथ-साथ चलने वाली प्रक्रिया है, हालांकि आज भी शिक्षक एवं स्कूल प्रबंधन इन दोनों प्रक्रियाओं को व्यवहार में बिल्कुल अलग मानकर चलते हैं। कहने के लिए वे सतत एवं समग्र मूल्यांकन की बात करते हैं लेकिन परंपरागत तौर-तरीकों में बहुत ही कम बदलाव नजर आता है।

कक्षा में सीखना आज भी बच्चों के वास्तविक अनुभवों से दूर है। उदाहरण के लिए, कक्षा 5 के विद्यार्थियों से जब पूछा गया कि उनके पास 500 रुपए हैं और उनको अगर एक रुपया और दिया जाए, तो वे कितने होंगे? अधिकांश शिक्षार्थियों ने मौखिक तौर पर तो सही जवाब 501 रुपए दे दिया, लेकिन लिखते समय उसे 5001 लिख गए। इसी तरह पहली कक्षा के बच्चे अपने घर के पशुओं की संख्या मौखिक तौर पर बता देते हैं, लेकिन उसे अंक में नहीं लिख पाते। तीसरी कक्षा के बच्चे नाम लिखकर भी वर्णों को अलग से नहीं पहचान पाते हैं। इन उदाहरणों को बताने का मकसद है कि दरअसल हमारी शिक्षा-प्रक्रिया को अगर ढर्रे से मुक्त किया जाए और यदि शिक्षक बच्चों का सतत आकलन करते रहें, तो उनको पता चल सकेगा कि कक्षा में कौनसे बच्चे किस स्तर पर हैं ताकि वे उनकी समय पर मदद कर सकें।

हम अभी क्या कर रहे हैं? परीक्षा केंद्रित मूल्यांकन मात्र ही तो, जिसमें निश्चित अंतराल में परीक्षाओं का आयोजन कर परिणाम तैयार किया जाता है। यह मूल्यांकन भी महज सूचनाओं को रटने की जांच भर होता है। आदर्श क्या है? कक्षा में प्रतिदिन के क्रियाकलाप का आकलन साथ ही हो जाए और बच्चों को जरूरत

के मुताबिक फीडबैक भी मिल जाए। आकलन का अर्थ ही बच्चों के सीखने में आ रही समस्याओं को चिह्नित करने और उनके साथ ही कारणों को समझते हुए बेहतर सीखने में मदद करना होता है।

अक्सर स्कूली व्यवहार में बच्चों को सोचने के अवसर देने के बजाय जवाब रटाकर अपनी जिम्मेदारी पूरी मान लेते हैं। दरअसल, यह सीखने के न्यूनतम अर्थ में भी सही नहीं बैठता। सीखने का मतलब है ज्ञान को अपने संदर्भों में इस्तेमाल कर पाना। सीखने की इस प्रक्रिया में बच्चे स्वभाविक तौर पर गलती करते हैं। ब्लैकबोर्ड पर लिखकर प्रश्नोत्तर रटा देने मात्र से यह मान लिया जाता है कि बच्चे सीख गए हैं। हालांकि, प्राथमिकता इस बात की होनी चाहिए कि आकलन को कक्षा-कक्ष की प्रक्रिया से जोड़कर शिक्षक देख सके।

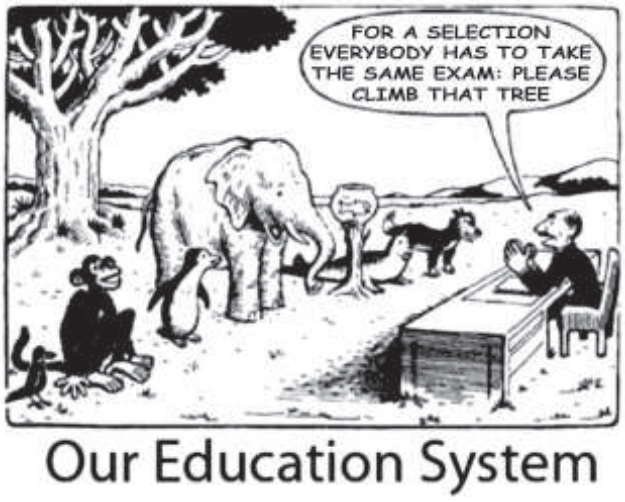

यह प्रक्रिया बहुत आसान नहीं है और इसके लिए हमें व्यापक बदलावों को लागू करना होगा। सबसे पहले तो हमें कक्षा शिक्षण की प्रक्रिया को बदलना होगा। आज भी बच्चे ब्लैकबोर्ड के सामने पंक्तिबद्ध होकर दिन भर बैठे रहते हैं, पाठ का घोंटने का क्रम चलता रहता है। शिक्षकों की सारी चेष्टा होती है कि पाठ्यक्रम बस पूरा हो जाए, सही मायनों में शिक्षार्थी समझ रहा है या नहीं; इसको सोचने की फुरसत भी कहां है? ऐसे में बच्चे और शिक्षक सीखने की एक मिथ्या धारणा के शिकार बनते हैं।

कक्षा को बदलना इतना आसान है क्या? शायद नहीं। इसलिए, कि बदलाव एक-आयामी नहीं होता है, इसके लिए कई घटक काम करते हैं। हमें इसके लिए बदलाव को एक प्रोजेक्ट की तरह न देखकर दीर्घकालीन रणनीति की तरह समझना होगा और इसे धरातल तक पहुंचाने के प्रयास करने होंगे। हमें शिक्षक प्रशिक्षणों का स्तर ऊंचा उठाना होगा, उन्हें शोध-आधारित करना होगा। इसके अलावा विद्यालय के आधारभूत ढांचे को बदलना होगा, व्यवस्थागत बदलाव लाने होंगे। अहम् बात यह है कि जिस परिवर्तन की बात की जा रही है, वह शिक्षकों पर अधिक निर्भर करेगा। एक सुलझी सोच के साथ नए शिक्षकों को तैयार करने में वक्त लगेगा। इसी वजह से, तब तक हमें वर्तमान शिक्षकों का ही कौशल बढ़ाना होगा और उनकी विविधता को ध्यान में रखते हुए ही उनको प्रशिक्षित करना होगा। इसके साथ ही, हमें सतत एवं समग्र मूल्यांकन की अवधारणा पर अपनी समझ को बढ़ाना होगा। उसके बारे में स्पष्ट तौर पर शिक्षकों-शिक्षार्थियों को बताना होगा।

डूंगरपुर, 'डाइट' के हमारे अनुभव

आकलन संबंधी बदलाव और शिक्षकों से अपेक्षाओं को लेकर हमने राजस्थान के डूंगरपुर में कुछ काम किया है। सबसे पहले, हमने हमारे कार्यों की खामियों (गैप्स) को पहचाना। इसमें दक्ष प्रशिक्षकों का चयन सबसे अहम् था, इसीलिए हमने शिक्षकों का एक ऐसा समूह चुना, जिसमें क्षमता तो थी ही, उनके पास प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाने का मौका भी था। इनको हमने केवल पांच-छह दिनों का प्रशिक्षक न मानकर शोधार्थी के रूप में तैयार किया। उनको बच्चों के साथ काम करके सीखना था। उन्हें यह चुनौती भी दी गई कि यदि आप यह बदलाव स्वीकार करते हैं तो पहले स्वयं की कक्षाओं में यह बदलाव करके दिखाना होगा। इसके लिए 'डाइट' में आयोजित होने वाले शिक्षक-प्रशिक्षणों में भी इन दक्ष प्रशिक्षकों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप अधिक से अधिक बुलाया भी गया।

इन शिक्षकों के विद्यालय को ही आसपास के 20 से 25 विद्यालयों के लिए संदर्भ विद्यालय के रूप में चुना गया, जहां शिक्षकों के लिए मासिक बैठक का आयोजन किया जाता रहा है। इसमें आने वाले शिक्षक उनकी कक्षाओं को देखते हैं और सतत आकलन के तरीकों से उनका वास्तविक परिचय होता है। इन संदर्भ विद्यालयों में सीखने की प्रक्रिया के समस्त घटक- बच्चे, शिक्षक, किताबें, पाठ्यक्रम, प्रशिक्षक और माहौल सभी कुछ उपलब्ध हैं। इनको बाल हाट,

स्वास्थ्य कॉर्नर, सक्रिय छात्र संसद, चल पुस्तकालय और आकर्षक-प्रार्थना-सभा जैसी कई गतिविधियों के माध्यम से बाल-मित्र विद्यालय के रूप में भी तैयार किया गया है। इससे इन संदर्भ विद्यालयों में परंपरागत कक्षा-शिक्षण से हटकर कक्षा के बाहर भी बच्चों को सीखने के अवसर मिल रहे हैं।

शिक्षकों का नजरिया

बदलाव के बारे में एक पुरानी कहावत है। किसी भी व्यवस्था में बदलाव की पहले आलोचना होती है और आखिर में उसे स्वीकार कर लिया जाता है। सतत और समग्र आकलन इसी चुनौती से दो-चार है। शिक्षकों के नजरिए में बदलाव एक चुनौती से भरा काम है। इसके लिए शिक्षकों को स्वयं यह समझना होगा कि हम जिन लक्ष्यों के लिए स्कूली शिक्षा का इंतजाम कर रहे हैं, क्या हमारे शिक्षण के जरिए हम उन्हें अर्जित कर पा रहे हैं। हमने लक्ष्यों से लेकर शिक्षण प्रक्रियाओं पर समझ विकसित करने से शुरुआत की। हमने सीसीई को लागू करने में दक्ष प्रशिक्षकों के साथ इस प्रयोग को आजमाया, जिसके सकारात्मक परिणाम निकले। हमने उनके चयन का आधार ऐसा रखा, जिसके लिए उनको अपनी कक्षाओं व विद्यालयों में सवालों से जूझना पड़ा। जब उन्हें प्रशिक्षण में अपने सवालों के जवाब मिले, तो उनका भी नजरिया बदला। वे खुद बदलाव के सारथी बने। हालांकि, यह बदलाव दक्ष प्रशिक्षकों के साथ कुछ शिक्षकों तक सीमित था, पर इससे हमें यह पता चला कि बदलाव असंभव नहीं है।

शिक्षा में हो रहे इस बड़े बदलाव को हालांकि शिक्षक-केंद्रित मात्र करने की जरूरत नहीं है। इससे राज्य के प्रत्येक विद्यार्थी को भी प्रभावित होना चाहिए। राज्य से लेकर विद्यालय तक को एक साझा समझ विकसित करनी होगी। फिलहाल, सतत व समग्र आकलन को एक अलग इकाई के तौर पर देखा जा रहा है। निजी विद्यालय इसे अलग तरह से देखते हैं। कई प्रकाशक अपनी किताबों पर केवल सीसीई आधारित पाठ्यपुस्तक का लेबल लगाकर लोगों को भ्रमित कर रहे हैं। इसीलिए, यह जरूरी है कि राज्य एक दिशा-निर्देश जारी करे, हरेक एजेंसी और स्टेकहोल्डर इसे समग्रता में देखे और उस पर ही अमल करे।

इस बदलाव के लिए विद्यालय प्रबंधन को भी सोच बदलनी होगी, समय-सारणी में लचीलापन स्वीकार करना होगा। इसकी वजह यह है कि यदि एक शिक्षक को कोई गतिविधि बच्चों के साथ करनी है, तब उसके लिए 30 या 40 मिनट का समय शायद पर्याप्त न हो। इसी प्रकार बच्चों की क्षमता विकास के लिए पर्याप्त समय व अवसर दिए जाने चाहिएं, जिसके लिए समय सीमा बांधना फिर सीखने में बाधक होगा।

शोध हमें बताते हैं कि बच्चों व बड़ों के सीखने के तरीके अलग-अलग होते हैं। इसके साथ ही हम सभी विविध तरीकों से सीखते हैं। इसी वजह से आकलन और मूल्यांकन के तरीकों में भी विविधता होनी चाहिए। प्रत्येक बच्चे के परिवेश मे विविधता होती है, जिससे उसके अनुभवों में विविधता होना भी स्वभाविक है। इस विविधता को भी सीखने के लिए एक संसाधन के रूप में देखा जाना चाहिए। कक्षा में शिक्षकों को बच्चों की विविधता को पहचान कर आकलन के लिए उस अनुरूप विविध उपकरणों को काम में लेने की जरूरत है।

पिछले कुछ साल में किए गए काम से आकलन व मूल्यांकन की इस नई तकनीक पर कार्य करने के लिए शिक्षक-प्रशिक्षकों की व्यापक समझ का विकास करना प्राथमिकता होना चाहिए। शिक्षक-प्रशिक्षकों के साथ शिक्षकों को भी एक शोधार्थी के रूप में कार्य कर आकलन को समझने व समझाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही इस बदलाव को समग्रता में देखने की आवश्यकता भी है। प्रारम्भ में यह एक इकाई का कार्य हो सकता है, लेकिन धीरे-धीरे इसे प्रत्येक इकाई का हिस्सा बनाना पड़ेगा। इसके बाद ही हम सही मायनों में 'सीखने के आकलन' को 'सीखने के लिए आकलन' में बदल सकते हैं। आकलन दरअसल सीखने का ही हिस्सा है, यह बात अच्छे से स्थापित करते हुए ही हम अपने प्रयासों से अपेक्षित परिणाम पा सकेंगे। ◆

लेखक परिचयः राजस्थान के डूंगरपुर जिले की 'डाइट' में व्याख्याता हैं और सतत एवं समग्र मूल्यांकन के क्रियान्वयन से जुड़े हैं।